अध्याय-पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

प्राथमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूल आधार होती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत में शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर विकास हुआ है। जिसके अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है। वर्तमान में भी प्राथमिक शिक्षा को सभी के लिये सर्वसुलभ बनाने हेतु विभिन्न शैक्षिक योजनायें एवं कार्यक्रम चलाये जा रहे है।

प्राथमिक शिक्षा पर सरकार द्वारा इतना धन व्यय करने बावजूद अभी भी कई विद्यार्थी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाते साथ ही एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में विभिन्न कौशलों(लेखन, पाठन एवं चित्रण) के प्रयोग करने की क्षमता, पब्लिक एवं निजी स्कूलों के विद्यार्थियों की तुलना में कम पायी जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी के अधिगम से संबंधित है जिसमें उनके द्वारा सीखे जाने वाले विभिन्न कौशलों (लेखन, पाठन एवं चित्रण) के अभ्यास हेतु प्रयोग की जाने वाली शैक्षिक सामग्री के बारे में जानने के लिये किया गया है।

प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थी विभिन्न कौशलों (लेखन, पाठन, चित्रण) का अभ्यास करता है जिसके लिये उसके पास पर्याप्त मात्रा में इन कौशलों से संबंधित शैक्षिक सामग्री का उपलब्ध होना अतिआवश्यक होता है। प्राथमिक स्तर पर किसी भी कौशल को सीखने तथा अभ्यास करने हेतु पर्याप्त शैक्षिक सामग्री की कमी विद्यार्थी के पास बनी रहे, तो उसे किसी भी कौशल के अभ्यास हेतु पर्याप्त अवसर नहीं मिल पायेंगे, परिणामस्वरूप वह उस कौशल को सीख नही पायेगा तथा यह कमी उसके आगे के अध्ययन में भी बनी रहेगी।

शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता सभी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों (शहरी एवं ग्रामीण) में समान एवं पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी के अधिगम में ज्ञान ग्रहण करने से ज्यादा विभिन्न कौशलों के अभ्यास का अधिक महत्व होता है। विद्यार्थी के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता जितनी अधिक मात्रा में हो उसे उतने ही अधिक अवसर किसी कौशल को सीखने एवं अभ्यास करने के मिलेंगे।

उदाहरण के लिये अधिक मात्रा में चित्रण सामग्री की उपलब्धता से विद्यार्थी विभिन्न आकृतियों को बनाना तो सीखता है साथ ही विभिन्न प्रकार के रंगों का प्रयोग करना भी सीख जाता है। अतः कौशल चाहे जो भी हो उसका अभ्यास अति महत्वपूर्ण होता है, जिसके लिये शैक्षिक सामग्री का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना आवश्यक होता है, प्रत्येक कौशल का विद्यार्थी के अध्ययन में महत्व होता है जिसे सीखने के लिये शैक्षिक सामग्री माध्यम का कार्य करती है।

प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी-अपनी क्षमता होती है, जिसका प्रयोग वह अधिगम हेतु करता है। विभिन्न कौशलों को सीखने हेतु उसे अपनी क्षमता का ही प्रदर्शन करना होता है। पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों को अपनी क्षमता प्रदर्शन करने के लिये पर्याप्त मात्रा में शैक्षिक सामग्री उपलब्ध रहती है परंतु सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पास इसकी उपलब्धता कितनी है यह देखना आवयश्क है।

शैक्षिक अवसरों में समानता के अंतर्गत सरकारी प्राथमिक विद्यालयों (शहरी एवं ग्रामीण) में विद्यार्थियों के पास विभिन्न कौशलों के अभ्यास हेतु समान मात्रा में शैक्षिक सामग्री उपलब्ध है अथवा नहीं।

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को भी अपनी क्षमता प्रर्दशित करने के लिये समान माध्यम (शैक्षिक सामग्री) समानता के साथ उपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि उन्हें भी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के समान विभिन्न कौशलों के अभ्यास हेतु समान अवसर उपलबध हो सकें।

वर्तमान लघु शोध में शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को विभिन्न कौशलों के अभ्यास हेतु पर्याप्त मात्रा में शैक्षिक सामग्री को समानता के साथ उपलब्ध कराने का सुझाव प्रस्तुत किया गया है।

5.1 शोध सरांश

प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम प्रस्तावना जिसके अतंर्गत शैक्षिक सामग्री, शैक्षिक अवसरों में समानता का परिभाषीकरण, शैक्षिक सामग्री का प्राथमिक शिक्षा में स्थान, विद्यार्थी के अधिगम में शैक्षिक सामग्री का स्थान, शैक्षिक सामग्री की विशेषतायें, भार रहित अधिगम तथा अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन किया है।

समस्या कथन :- *ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली शैक्षिक सामग्री : तुलनात्मक अध्ययन।*

प्रस्तुत शोध के लिये निम्न उद्देश्यों को निर्धारित किया गया ।

- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री क्या है, देखना।
- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली लिखित सामग्री क्या है, देखना।
- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली पाठ्य सामग्री क्या है, देखना।
- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री की तुलना करना।

प्रस्तुत अध्ययन में 3 परिकल्पनाओं को लिया गया। शोध कार्य को ग्वालियर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 1, 2 एवं 3 के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया। जिनमें 4 सरकारी एवं 1 शहरी पब्लिक स्कूल को लिया गया।

द्वितीय अध्याय में शोध समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया गया जिसमें शोध समस्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित अध्ययनों की जानकारी दी गई है।

तृतीय अध्याय में शोधकर्ता में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया, जिसके अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कक्षा 1, 2 एवं 3 के कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने स्वनिर्मित चेक लिस्ट का प्रयोग विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री की जानकारी प्राप्त करने हेतु किया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु आंकडों को तुलनात्मक रूप से प्रदर्शित करने हेतु ग्राफीय गणना का उपयोग किया।

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या ग्राफीय गणना के आधार पर की गई तथा शोध के उद्देश्य के आधार पर परिकल्पनाओं के सत्यापन की जांच की।

पंचम अध्याय में उपयुक्त ग्राफीय गणना का उपयोग करते हुये न्यादर्श के प्रदत्तो के संकलन एवं विश्लेषण के पश्चात् परिकल्पना के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुये उनका विवरण किया गया ।

5.2 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधकार्य से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :-

- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है ।
- ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पास उपलब्ध शैक्षिक सामग्री में कक्षानुसार भी अन्तर पाया जाता है ।
- पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में काफी अधिक है ।

5.3 शैक्षिक उपयोगिता

बालक का अधिगम अधिकतर वातावरण के साथ उसके द्वारा की जाने वाली अतः क्रिया पर निर्भर करता है उससे भी अधिक महत्वपूर्ण होता है उसके द्वारा भाषायी और आंकिक कौशलों को सीखना जो कि इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस प्रकार की सामग्री प्रत्येक (बालक) को प्रदान कर रहे हैं । यह सामग्री वातावरण के साथ बालक का संपर्क स्थापित करने हेतु माध्यम का कार्य करती है ।

विद्यालय अधिगम अधिकतर संरचनात्मक, अधिगम होता है तथा किसी कौशल को अपनाना (सीखना) मानक कौशल कहलाता है । यह मानक कौशल सिर्फ तभी सीखा जा सकता है जब बालक उसका बार-बार अभ्यास करे । यह अभ्यास तभी संभव हो सकता है जब प्रत्येक बालक को पर्याप्त मात्रा में अधिगम सामग्री प्रदान की जाये ।

उदाहरण के लिये किसी भी अक्षर का मानक लेखन सीखना तभी संभव हो सकता है जब बालक को बार-बार उस अक्षर के आकार, आकृति एवं अलग-अलग प्रकार से लिखने का अभ्यास करने के लिये स्लेट एवं कॉपी पर बनाने का पर्याप्त अवसर मिल सके ।

प्राथमिक स्तर पर अधिगम सामग्री के अभाव में किसी भी विद्यार्थी से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह उस कौशल को उचित प्रकार सीख सके।

प्राथमिक स्तर पर किसी कौशल को सीखने संबंधी कमी विद्यार्थी के आगे के अध्ययन तक बनी रहती है तथा बाद में उसमें सुधार संभव नहीं हो पाता।

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि शैक्षिक सामग्री का प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी के अधिगम से विशेष संबंध है अतः शिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु प्रस्तुत अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

5.4 सुझाव

1. प्राथमिक स्तर पर सभी शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के पास विभिन्न कौशलों (लेखन, पाठन, चित्रण एवं अन्य) के अभ्यास हेतु शैक्षिक सामग्री समान रूप से उपलब्ध कराना चाहिए।
2. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की गुणात्मक एवं संख्यात्मक उपलब्धता को आधार मानकर यही गुणवत्ता एवं संख्यात्मकता सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों तक उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिए।
3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों (शहरी एवं ग्रामीण) क्षेत्र के शिक्षकों को प्राथमिक स्तर पर विभिन्न कौशलों को सीखने के महत्व को समझते हुये प्रत्येक विद्यार्थी को आवश्यक शैक्षिक सामग्री लेकर विद्यालय आने हेतु अभिप्रेरित करना चाहिये।
4. सरकार को सभी विद्यालयों में भौतिक एवं शैक्षिक सुविधाओं के अतिरिक्त प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पास शैक्षिक सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता पर भी ध्यान देना चाहिये।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

- प्राथमिक शालाओं में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाने वाली शैक्षिक सामग्री एवं उपलब्धि के बीच संबन्ध को देखना
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों से भार रहित अधिगम के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- कम्प्यूटर साक्षरता का एक प्रमुख हिस्सा बन चुका है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में इसकी उपलब्धता को देखना।